ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

भीलवाड़ा जिले में वन संसाधनों का वितरण एवं बदलता स्वरूप

डॉ. सुरेन्द्र कुमार सैनी
सह–आचार्य, भूगोल विभाग
आर. एल. एस. राजकीय महाविद्यालय, कालाडेरा, जयपुर, राजस्थान

सारांश

वन संसाधन किसी भी क्षेत्र के सर्वांगीण एवम् सम्पोषणीय विकास हेतु महत्तवपूर्ण कारक होते हैं, जो नगर के विकास के साथ–साथ रोजगार सृजन एवं जीवन की गुणवत्ता सुधारने में सहासक होते है। जिससे अनेक प्रकार के प्रदूषणों की मात्रा बढ़ती जा रही है। जिसके समाधान में वन संसाधनों का संरक्षण एवं भावी पीढियों हेतु उन्हें अक्षुण्य बनाना अति आवश्यक है। प्राचीनकाल से ही मानव विभिन्न संसाधनों के संरक्षण के संबंध में विचार करता रहा है तथा वन संसाधन उस कड़ी में सदैव ही प्रथम स्थान पर रहे है। वर्तमान में पारिस्थितिकी शोध से ज्ञात होता है कि जैव मण्डल पर मनुष्य के निरन्तर, एकतरफा और अत्यधिक सीमा तक अनियन्त्रित प्रभाव से हमारी विकासशील मानव सभ्यता एक ऐसी सभ्यता में बदल रही है जो हरियाली के स्थान पर रेगिस्तानों को स्थापित कर रही है और पृथ्वी पर सभी जीवों के विनाश का कारण बन रही है। प्रस्तुत शोध–पत्र में राजस्थान राज्य के भीलवाडा जिले में वन संसाधनों के वितरण प्रारूप के आंकड़ों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है साथ ही बदलते मानव व्यवहार के की कारण जिले मे वन क्षेत्र में हुए परिवर्तनों को के विवरण को भी इस अध्ययन मे विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मूल बिन्दूः– सर्वांगीण विकास, सम्पोषणीय विकास, जीवन गुणवत्ता, रोजगार सृजन

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

परिचय :

वन भारतीय संस्कृति के उद्‌गमस्थल हैं। प्राचीनकाल में सम्पूर्ण–जीवन एक निश्चित अवधि के लिये वन्य आश्रम में विभक्त होता था। उस समय जीवन का आधे से अधिक भाग वृक्षों के आस–पास ही व्यतीत होता था। इन्हीं वृक्षों की छाया में बैठकर ऋृषि–मुनियों ने भारतीय संस्कृति की रचना की है। हमारे धर्म–ग्रन्थों में वृक्षों को जीवधारी की तरह महत्व दिया गया है। वृक्ष ही एक ऐसे महादानी हैं जो अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं किन्तु उसके बदले में किसी से कुछ नहीं चाहते हैं। वृक्षों में इतनी शक्ति व सामर्थ्य होती है कि वे सुख और शान्ति दोनों साथ–साथ देते हैं। धीरे–धीरे मानव सभ्यता विकसित होती गई परिणामस्वरूप अपने निजी स्वार्थों की पूति हेतु तथा व्यावसायिक आधार पर मनुष्य वनों को काटता गया। इस प्रकार सभ्यता के विकास तथा मनुष्यों की आवश्यकताओं में वृद्धि के साथ–साथ मनुष्य और वनों के बीच की दूरी तीव्र गति से बढ़ती गई और मनुष्यों का रहन– सहन भी जंगली जीवन से भिन्न होने लगा। यद्यपि सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य जंगली जीवन से दूर हटता गया किन्तु आज भी मनुष्यों को अपना जीवन निर्वाह करने के लिये वनों पर ही निर्भर रहना पड़ रहा है। भीलवाड़ा दक्षिणी राजस्थान का एक महत्त्वपूर्ण नगरीय केन्द्र है। अरावली पर्वत माला के पूर्व में अवस्थित यह एक पठारी भाग है, जहाँ कुल भौगोलिक क्षेत्र 10,455 वर्ग किमी. में से 795.20 वर्ग किमी. क्षेत्र है, जो कि भौगोलिक क्षेत्र का 7.6 प्रतिशत है। ये वन क्षेत्र भीलवाड़ा, माण्डलगढ़, जहाजपुर, शाहपुरा, गंगापुर व आसीन्द प्रादेशिक रेंजो में विभक्त है। भीलवाड़ा जिलों में मुख्यतःउष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ी मिश्रित प्रकार के वन पाये जाते है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

अध्ययन क्षेत्र :

भीलवाड़ा जिला राजस्थान के दक्षिणी भाग में अरावली पर्वत माला के पूर्व में अवस्थित है। जिसका विस्तार 25 1′ से 25 58′ उत्तरी अक्षांश एवं 74 1′ से 75 28′ पूर्वी देशान्तर तक है। समुद्र तल से औसत उँचाई 421 मीटर है, तथा यहाँ अधिकांश भाग पठारी है। भीलवाड़ा में जलवायु समशीतोष्ण प्रकार की एवं औसत वार्षिक वर्षा 9 से 30 सेमी. प्राप्त होती है। यह उत्तर में अजमेर, पश्चिम व दक्षिण में क्रमशः राजसमंद व उदयपुर, दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व में चित्तौड़गढ़ तथा पूर्व व उत्तर–पूर्व क्षेत्र बून्दी व टोंक जिलों से घिरा है।

उदेदश्य :

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. भीलवाड़ा के सन्दर्भ में वन संसाधनों के स्तर व वितरण का अध्ययन करना व उनका मूल्यांकन करना।
2. गत वर्षों में जिले में हुए वन संसाधनों में परिवर्तन एवं प्रवृत्ति का
3. विश्लेषण करना
4. वन संसाधनों के अभाव में उत्पन्न समस्याएँ व उनका समाधान प्रस्तुत करना।

विधि तंत्र :

प्रस्तावित शोध कार्य प्राथमिक व द्वितीयक समंकों पर आधारित है। द्वितीयक समंकों का संकलन नगर पालिका भीलवाड़ा, राजस्व विभाग, वन विभाग तथा अन्य सरकारी व निजी कार्यालयों द्वारा एकत्रित किये गये है। एकत्रित समंकों एवं सूचनाओं को अध्ययन के उददेश्यानुसार तालिकाबद्ध किया गया, जिससे अपेक्षित निष्कर्ष प्राप्त हो सकें।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

महत्वपूर्ण साहित्य समीक्षा :

1. गुहा आर. (2006) ''सोसिएल इकोलोजी'' इस पुस्तक को चार इकाइयों में बांटा गया है। लेखक ने पुस्तक में सामाजिक पर्यावरणीय व्यवस्था को विश्लेषित करने का प्रयास किया है। प्रथम अध्याय में लेखक ने प्रकृति एवं संस्कृति के आपसी तालमेल को समझाने का प्रयास किया है और अन्य अध्यायों में समस्त प्रकार संसाधनों को समझाने का प्रयास किया है। पुस्तक में लेखक ने दो सुप्रसिद्ध व विशेष घटनाओं का वर्णन भी किया है जो क्रमशः चिपको आन्दोलन और बहुचर्चित भोपाल गैस रिसाव की घटना है।
2. चौधरी ए. बी. (2007) ''फोरेस्ट एनवायरमेण्ट एण्ड मेन'' इस पुस्तक में लेखक ने वनों से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी विशेषताओं एवं अवधारणाओं की व्याख्या करते हुए वनों एवं मनुष्य के बीच आपसी सम्बन्धों को उभारने का प्रयास किया है। ताकि आम जन को वन (से जुड़ी हुई समस्याओं एवं समाधानों के बारे में जानकारी प्राप्त सके) पर्यावरण एवं मनुष्य से जुड़े विभिन्न विषयों की तीव्रता, उपयोगिता एवं आवश्यकता की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझ आ सके और विभिन्न विषयों से उसकी तुलना कर सके।
3. सैम और शेफर्ड (2011) ने लोगों की आजीविका के लिए वनों का अध्ययन किया और सुझाव दिया कि औपचारिक, राज्य–आधारित वन प्रबन्धन को आम तौर पर उत्पादन या संरक्षण–केन्द्रित किया जाना चाहिए। नाथाली वॉकर एवं अन्य (2007) ने वनों की कटाई और वन गिरावट को कम करने के लिए और वैश्विक रूप से प्रयास करने पर जोर दिया। रविन्द्रनाथ और अन्य (2014) ने आवधिक अनुमान का अवलोकन प्रदान करते हुए जंगलों और वृक्षारोपण के प्रकार के अन्तर्गत क्षेत्र पर रिपोर्टिंग प्रस्तुत की। उनकी राय में वनीकरण दर वन और जैव विविधता संरक्षण टिकाऊ वन के लिए महत्वपूर्ण है। बाबू और नौटियाल (2015) ने प्राचीन और वर्तमान के सन्दर्भ में भारत में वन संसाधनों का प्रबन्धन

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

दृष्टिकोण और प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन से सम्बन्धित मुद्दों को सामने लाये। प्राकृतिक संसाधन जैसे कि वन और वन उत्पाद जीवित जीवों के जीवित रहने के मूल स्रोत के रूप में पाये गए थे। आरम्भिक अवधि बाद में प्राकृतिक संसाधन धीरे–धीरे और लगातार धीमी गति से कम होते गये। मानव गतिविधियों में वृद्धि करने के लिए शुरूआत में प्राकृतिक संसाधन प्राथमिक रूप से उपयोग होते थे। कृषि, उद्योग और शहरीकरण के विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से हुआ। देश में कृषि परिदृश्य और अन्य विकास सम्बन्धी गतिविधियों का विस्तार हुआ तथा संसाधन संरक्षण, संरक्षण के बारे में पारम्परिक ज्ञान का महत्व में गिरावट शुरू हो गई।

जिले में भूमि का स्वरूप :

यदि भीलवाड़ा जिले मे धरातलीय संरचना पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है की यहाँ भूमि का स्वरूप पहाड़ी, मैदानी व नदी–नालों वाला है। शाहपुरा, गंगापुर, भीलवाड़ा एवं माण्डलगढ़ आसीन्द रेंजों के कई क्षेत्र समतल भी है, लेकिन अधिकतम पहाड़ी क्षेत्र माण्डलगढ़, जहाजपुर व भीलवाडा रेंजों में पड़ते है। पहाड़ी क्षेत्रों की मुख्य श्रेणियाँ अरावली व विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की है। मुख्यतः जिले का ढलान पश्चिम से पूर्व की ओर है।

जिले में मृदा व मृदा के प्रकार :

भीलवाड़ा जिले में विभिन्न भागों में भिन्न–भिन्न भूगर्भिक एवं भौतिक संरचना के कारण मृदा प्रकारों में पर्याप्त क्षेत्रीय विभिन्नता है। भीलवाड़ा जिले में मृदा के विस्तार पर दृष्टि डालें तो प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है की जिले में विभिन्न तहसीलों में मृदा के अलग–अलग प्रकार देखने को मिलते है। जिले में भूरी एवं पीली, दोमट, लाल कंकरीली एवं पहाड़ी मृदा तथा गहरी भूरी बलुई मृदा का विस्तार पाया जाता है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

तालिका संख्या 01 : भीलवाड़ा जिले में मृदा के प्रकार

क्र.सं.	मुख्य मृदा प्रकार	कुल क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)	कुल भूमि का प्रतिशत	क्षेत्र
1	भूरी एवं पीली	211206	20.16	जहाजपुर, माण्डलगढ
2	दूमट मृदा	560804	53.54	रूहाडा, आसीन्द, हुरड़ा, शाहपुरा
3	लाल कंकरी पहाडी दुमट	273840	26.14	माण्डल, आसीन्द, बनेड़ा, रायपुर
4	गहरी भूरी बलुई	1601	0.15	रायपुर, बनेड़ा

स्रोत : भारत वन रिपोर्ट (प्रतिवेदन) व राजस्थान वन रिपोर्ट, 2016

उपरोक्त तालिका में भीलवाड़ा जिले में क्षेत्रवार पायी जाने वाली मृदा का विवरण दिया गया है, तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है की जिले में भूरु एवं पीली मृदा जहाजपुर एवं मानडलगढ़ में, दोमट मृदा रूहाड़ा, आसिन्द, हूरड़ा तथा शाहपुर में, लाल कंकरीली तथा पहाड़ी दोमट मृदा मण्डल, आसिन्द, बनेड़ा एवं रायपु में तथा बलुई मृदा जिले में रायपुर तथा बनेड़ा क्षेत्रों मे पायी जाती है। जिले मे सरवाढगिक भाग पर दोमट मृदा का विस्तार पाया जाता है कुल मे कुल 53. 54 प्रतिशत भाग पर इस मिति का विस्तार पाया जाता है।

वनस्पति :

यदि भीलवाड़ा जिले में पायी जाने वाली वनस्पति के प्रकारो का विश्लेषण करें तो प्राप्त आंकड़ो की आधार पर ज्ञात होता है की जिले में मुख्यतः उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ी मिश्रित प्रकार की वनस्पति पायी जाती है। जिसमें खैर, बबूल, कीकर, हल्दू, वील, बेल, सफेद सिरस, सीताफल, नीम, अरडू, कैर, ढाक, पलाश, शहतूत, अमलतास, गुलमोहर, आँवला, गूलर, पीपल, बरगद आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

वन भूमि का वितरण :

वन मंडल भीलवाड़ा के अधीन वर्तमान के कुल 338 उपखण्ड है। सभी वन खण्ड विधिवत् राजस्थान वन अधिनियम के अंतर्गत रक्षित/आरक्षित/अवर्गीकृत वन के रूप में है। कुल वन खण्डों का क्षेत्रफल 79520.75 हैक्टेयर है। वन मंडल भीलवाडा का गठन 1983 में हुआ।

तालिका संख्या 02 : भीलवाड़ा जिले में वन क्षेत्र का वितरण

क्रं सं.	रेंज का नाम	वनखण्डों की संख्या	आरक्षित	रक्षित	अवर्गीकृत	कुल क्षे. (हैक्टेयर)1
1	आसीन्द	64	2105.53	1039	3871.98	7016.51
2	भीलवाड़ा	64	2479.9	1830	2099.45	6409.35
3	गंगापुर	23	491	486	467.52	1444.52
4	जहाजपुर	84	8489	8082.36	73	16644.36
5	माण्डलगढ़	70	30024.04	14827	201.75	45052.29
6	शाहपुरा	33	—	2941.32	12.40	2953.72
कुल		338	43579.47	29205.68	6725.6	79520.78

स्रोत : भारत वन रिपोर्ट (प्रतिवेदन) व राजस्थान वन रिपोर्ट, 2016

जिले में वन क्षेत्रफल एवं वृद्धि की प्रवृती 2005–2017 :

निम्न तालिका में भीलवाड़ा जिले में वर्ष 2005 से वर्ष 2017 तक के वन क्षेत्रफल के विवरण को दर्शाया गया है, जिसके अंतर्गत जीले में अति सघन वन क्षेत्र, मध्यम सघन वन क्षेत्र, कुले वन क्षेत्र, जिले में कुल वन क्षेत्र, वन क्षेत्र में दो वर्ष में आए परिवर्तन आदि के आंकड़ो का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

तालिका संख्या 03 : भीलवाड़ा जिले में वन क्षेत्रफल एवं वृद्धि की प्रवृती 2005–2017

क्र.सं.	वर्ष	भूमि क्षेत्र	अति सघन वन	मध्यम सघन वन	खुले वन	कुल वन	कुल भूमि का प्रतिशत	द्विवार्षिक परिवर्तन	झाड़ी क्षेत्र
1	2017	10455	0	31	190	221	2.11	–1	158
2	2015	10455	0	34	193	227	2.17	0	129
3	2013	10455	0	34	193	227	.2.17	2	129
4	2011	10455	0	34	191	225	2.15	3	129
5	2009	10455	0	33	189	222	2.12	0	126
6	2005	10455	0	34	186	220	2.10	2	136

स्रोत : भारत वन रिपोर्ट (प्रतिवेदन) व राजस्थान वन रिपोर्ट, 2016 (क्षेत्रफल वर्ग किलोमीटर में)

उपरोक्त तालिका के आंकड़ो के अध्ययन से जिले में वन क्षेत्रफल के संबंध में निम्न तथ्य स्पष्ट होते है–

1. भीलवाड़ा जिले में अति सघन वन क्षेत्र नगण्य पाया गया है, जो कि पिछले कई वर्षों की स्थिति है।
2. मध्यम सघन व खुलें वनों के आँकड़े स्थिरता दर्शाते हैं, जो गत बारह वर्षों में भी वृद्धि दर प्राप्त नहीं कर पायें है।
3. द्विवार्षिंक परिवर्तन को देखा जाए तो 2009–2011 के मध्य 3 अंकों की बढ़त के बाद 2011 से निरंतर यह ग्राफ गिरता ही जा रहा है, जो जलवायु परिवर्तन से झूझ रहे इस दौर के लिए एक शोचनीय विषय है।
4. भीलवाड़ा जिला एक औद्योगिक जिले के रूप में विकसित हुए, जिले के कारण यहाँ खाली पड़े नगरों के निकट की भूमि पर जहाँ वनावरण होना चाहिए था वहाँ औद्योगिक इकाईयां स्थापित है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सुझाव एवं संभावनाएं :

जिले में वन क्षेत्र को बढ़ाने हेतु निम्न सुझावों को अपनाया जा सकता है–

1. भीलवाड़ा जिले में अति सघन वन क्षेत्र के विकास का कार्य एवं उसका नियोजन किया जाना चाहिए, जिससे कि कुल क्षेत्र के अनुपात में वन भूमि का भाग बढ़े।
2. औद्योगिक रूप से विकसित जिला होने के कारण यहाँ अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ (वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण) देखी जाती है। जिसका समाधान वन एवं वृक्ष क्षेत्र में वृद्धि से ही सम्भव है।
3. भीलवाड़ा में उद्योगों के निकट एवं खाली पड़ी भूमि पर वनावरण के साथ–साथ सड़कों के किनारें हरित–बेल्ट विकसित करना चाहिए।
4. वन स्वावलम्बन कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है, जिसमें स्थानीय लोगों द्वारा आपसी सहयोग से वन एवं वृक्षों का विकास एवं रख–रखाव करवाया जाना चाहिए।
5. जायका (जापान इन्टरनेशनल कॉ–ऑपरेशन एजेन्सी) के सहयोग से किये जा रहे वृक्षारोपण व जैव विविधता संरक्षण के कार्यों को इस क्षेत्र में साझा प्रबंधन करके गहनता से किया जाए

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भीलवाड़ा जिले में वन क्षेत्र के वर्ष 2005 से वर्ष 2017 तक के आंकड़ो का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है की जिले में वन क्षेत्रफल में गिरावट देखने को मिलती है परंतु जिले में वन विकास की अनेक समभावनाए विद्यमान है अतः विभिन्न स्तर पर प्रयास कर जिले में वन क्षेत्रफल में वृद्धि हेतु स्करत्म्क्र्य्स किए जाने की नितांत आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल एन.एल. (1900) : भारतीय कृषि का अर्थतंत्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
2. अग्रवाल एम.डी. एवं ओ.पी. गुप्ता, (2000) : भारत में आर्थिक पर्यावरण, रमेश बुक डिपो, जयपुर
3. एस्टोन, जे. और एस. जे. रोगर्स (1967) : इकोनोमिक चेन्ज एण्ड एग्रीकल्चर, एडीनवर्ग – ओलिवर एण्ड बोयड
4. बघेल, महिपाल सिंह व रामोतार पोरवाल (1991) : आधुनिक कृषि विज्ञान, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर
5. बर्कहिल, पी.सी. (1977) : ''एग्रीकल्चर प्रोब्लमस ऑफ इंडिया'' विकास पब्लिकेशन्स नई दिल्ली
6. चौहान, टी.एस. (1987) : एग्रीकल्चर ज्योग्राफी, ए स्टैडी ऑफ राजस्थान, स्टेट एकेडमिक पब्लिशर्स, जयपुर
7. चौहान, एस.पी. (1987) : ''कृषि भूगोल राजस्थान राज्य का अध्ययन''
8. गुर्जर, आर.एस (2000) : ''एग्रीकल्चर इकोलॉजी ऑफ शेखावाटी'' पी.एच.डी. थीसिस
9. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, भीलवाड़ा–2001–2017
10. Senapati,M.R.(2009), Vulnerabilities to climate change,Kurukshetra,A Journal published by Govt. of India